International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 44-49

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 44-49
www.allresearchjournal.com
Received: 10-11-2016
Accepted: 11-12-2016

डॉ. मनोरमा सिंह
एम.ए. एवं पी.एच.डी. (इतिहास)
प्राचार्य, पं. आर.एस. शिक्षा संस्थान, पहरिया जिला रीवा (म.प्र.)

Correspondence
डॉ. मनोरमा सिंह
एम.ए. एवं पी.एच.डी. (इतिहास)
प्राचार्य, पं. आर.एस. शिक्षा संस्थान, पहरिया जिला रीवा (म.प्र.)

सल्तनत काल में महिलाओं का स्वरूप

डॉ. मनोरमा सिंह

सारांश
सल्तनत काल की प्रबुद्ध महिलाओं में मात्र राजनीतिक ही नहीं सांस्कृतिक जगत में भी महत्वपूर्ण कार्यों का निर्वहन किया है। नारी में देवत्व का बोध समाज ने किया है। नारी जहाँ सुंदर है वहीं उसमें देवत्व भी है पुरूष और महिला दोनों के शरीर में उस आत्मा का अस्तित्व है वह नर है न नारी। दक्षिण के शैव संप्रदायों में पुरूष ही नहीं, स्त्री का भी महत्व देखने को मिलता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में पुरूष और स्त्री में कोई भेद नहीं है। आध्यात्म जगत में जहाँ पुरूषों ने ख्याति अर्जित की है वहीं महिलाओं ने भी ख्याति अर्जित की है। दक्षिण भारतीय समाज में धर्म एवं अध्यात्म की देवी अक्कमहादेवी के विचार सर्वथा उल्लेखनीय है। उन्होंने स्त्री और पुरूष को समान रखा है। भारत में तुर्की शासन साढ़े तीन सौ वर्षों से भी कुछ अधिक चला। इस बीच में विजय तथा दमन की प्रक्रिया भी जारी रही। इसलिए इस युग में लाखों हिन्दू मारे गये लाखों का युद्धों में संहार हुआ और लाखों स्त्रियाँ तथा बच्चे मुसलमान बनाकर दासों के रूप में बेच दिये गये। तिमूर ने मुहम्मद तुगलक से युद्ध करने के पूर्व एक दिन में ही एक लाख हिन्दू बंदियों को कत्ल करवा दिया। हमारे देश के इतिहास के किसी भी युग में प्रारंभिक अथवा परवर्ती ब्रिटिश युग में भी मानव जीवन का इतना नृशंसतापूर्ण विनाश नहीं किया गया जितना कि तुर्क अफगान शासन के इन 350 वर्षों में। तुर्की सुल्तान तथा उसके प्रमुख अनुयायी समृद्ध हिन्दू परिवारों में अपने लिए पत्नियाँ प्राप्त करने के इच्छुक रहते थे, और इस हेतु वे उच्च सामंतों को अपनी लड़कियाँ देने पर विवश करते थे। मुस्लिम कानून के अनुसार इन हिन्दू लड़कियों को पहले अपने धर्म से वंचित करके मुसलमान बना लिया जाता और उनके साथ विवाह किया जाता था।

शब्द कुंजी : सल्तनत काल, महिला व स्वरूप

प्रस्तावना
सल्तनत कालीन महिलाओं के संबंध मे अध्ययन करने के पूर्व प्राचीन इतिहास के ग्रंथों के अध्ययन पर बिल्हण ने कश्मीर की स्त्रियों की प्रशंसा में लिखा है कि वह संस्कृत एवं प्राकृत दोनों भाषाएं अच्छी धारा प्रवाह में बोलती थी।
हर्ष की बहन राजश्री सभी कलाओं मे निपुण थी। दक्षिण भारत के राजघरानों में नृत्य संगीत कला स्त्रियों के जीवन का अभिन्न अंग प्रतीत होती थी। जिनकी ललित कलाओं के शिक्षा के उत्तम प्रबंध के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं।
कश्मीर के शासक क्षेत्रगुप्त 950 से 958 की पत्नी दिद्दा ने अपने पति को शासन चलाने में मदद की थी। जिस काल के सिक्को में "द्वि–क्षेत्र" अंकित हैं जो दिद्दा के लिए ही है।
राजपूताना काल में सांभर के चौहान मुखिया की पत्नी सोमल देवी के सिक्के प्राप्त हुए हैं। परंतु अन्य अभिलेख प्राप्त नहीं हो सके।
चालुक्य शासक विक्रमादित्य षष्ठम की रानी लक्ष्मी देवी का उल्लेख है, जो सम्राट जैसा ही शासन की है।
कश्मीर में अनंत की रानी सूर्यमती राज्य की शासिका बनी। दक्षिण भारत के सोलंकी नरेश विक्रमादित्य की बहन चार प्रदेशों की शासिका थी। कर्नाटक की महिलाएं प्रांतीय शासक होती थी।
चालुक्य परिवार के राजा चन्द्रादित्य की रानी विजयाभटराटिका पति के साथ शासन के कार्य का देखरेख करती थी। इसी वंश भी रानी मैला देवी वनवासी प्रदेश का शासन करती थी। कश्मीर की सुगंध और दिद्दा नामक रानियाँ अपने प्रशासन और राज्य काल के लिये विख्यात थी। दक्का देवी की और भल्ला देवी जैसी गुजरात की चालुक्य वंशीय रानियों ने अपने राज का प्रशासन निष्ठापूर्वक किया [1]
इसके पूर्व प्राचीन मिश्र और ईरान में भी रानियों ने शासन किया था और कई बार संरक्षिका के रूप में नावालिग राजकुमारों के शासनकाल में भी राज्य संभाला था। [2]
सल्तनत कालीन ऐतिहासिक स्रोतों के अध्ययन से सल्तनत काल में महिलाओं के अनेक स्वरूप पाये जाते हैं। जैसा कि सल्तनत युग 1206ई. से 1526 तक के युग को कहा गया है।

कोई भी समय या समाज महिलाओं की सहभागिता के बिना अपूर्ण है। यह बात अलग है कि विभिन्न समयों पर उनके स्वरूप पृथक हों। इसी प्रकार सल्तनत काल मे महिलाओं के स्वरूपों में भी कुछ ऐसा ही है। इस युग में महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती है। इस अवधि में कई वर्षों के बदलाव एवं इस्लाम के प्रचार के कारण होने वाले युद्धों दुष्मनों को मारने व उन्हें अपनी अधीनता में करने आदि कारणों से होने वाले दुर्व्यवहारों से उस काल की महिलाएं भी अछूती नहीं रही। युद्धों के समय जीतने वाले क्षेत्रों की महिलाओं को दासियां बनाना, हरम मे रखना आदि की स्थितियाँ उस काल में अत्यधिक रहती थी।

भारत के अतिरिक्त काबुल में भी इन्हीं कालों में उमर शेख मिर्जा की मृत्यु के समय 11 वर्ष की उम्र में बाबर की शत्रुओं से सुरक्षा एहसास दौलत वेगम की थी और कुतलुक निगार खानम, बाबर की माँ 1508 ई. तक बाबर की प्रत्येक कठिनाइयों मे साथ देती रही। बाबर की 5 वर्ष बड़ी बहन संपूर्ण जीवन काल में बाबर का साथ देती थी। भारत में मुगल काल के साम्राज्य की नींव डाली थी। बाबर ने अपने बाबर नामा में अपनी माँ की बुद्धिमता व दूरदर्शिता की प्रशंसा की है। [3]

सल्तनतकालीन समाज यद्यपि काफी कुछ विकृत हो गया था फिर भी समाज की महिलाओं ने विविध क्षेत्रों में कार्य किया। सल्तनत कालीन राजनीति में कुछ ऐसी महिलायें मिलती है, जिन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कुछ अंशों में देखा जाए तो पुरूषों से भी आगे बढ़ गई। सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश अपने शासन के उत्तरार्ध में जब उत्तराधिकार का विचार कर रहा था, तब उसे अपने पुत्रों में पुत्री रजिया श्रेष्ठ नजर आई। उसे योग्य बनाने के लिए शासन प्रशासन ही नहीं सैनिक शिक्षा भी दिलाई थी। रजिया ने अपने पिता के इस उत्तराधिकार के औचित्य को सार्थक भी किया था। वह अपने भ्राताओं की अपेक्षा योग्य शासिका निकली। सेना का संचालन भी किया। परंतु पुरूषों की कूटनीतिक चालों मे फंस जाने के कारण अधिक दिन तक शासन न कर सकी। अन्यथा उसका काल राजा प्रजा के हित के अनुरूप काफी लंबा होता और वह अपने शासनकाल में बहुत कुछ नया कर गई होती। इसी प्रकार इस काल की कुछ और भी महिलाओं ने समकालिक राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

इसी प्रकार सल्तनत कालीन सामाजिक जीवन में भी महिलाओं ने अपनी पहचान स्थापित की। पुरूष और स्त्री के बराबर की बात भी इस काल में उठी जिसे महिलाओं ने आगे बढ़ाया। समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों का शोध भी इस काल की महिलाओं ने किया। यद्यपि समाज के कुछ वर्गों ने महिला का शोषण ही नहीं उसका अंग प्रदर्शन भी मंदिरों में किया। पर इस यथार्थ को समाज धीरे–धीरे समझने लगा। परन्तु ये भी विचार उठा नारी के अभाव में नर का मोक्ष संभव नहीं है। मोक्ष के लिए भी देवियों की उपासना इस काल में बहुतायत हुई और उन्हें देवी रूप में मंदिरों में प्रतिष्ठित भी किया।

मुस्लिम शासन के स्थापित होने के साथ इस्लाम परंपरानुरूप हिन्दू व मुस्लिम स्त्रियों का कार्य क्षेत्र सीमित होकर चार दीवारी में संकुचित रह गया। सल्तनत काल का समय 1206 से 1526 तक का राजनैतिक एवं सामाजिक दृष्टियों से उपलब्धि विहीन रहा। भारत मे पर्दा प्रथा भी मुसलमानों से रक्षा के लिये हिन्दुओं ने प्रारंभ किया। [4] पूर्व मध्यकाल में बाल बिवाह के कारण महिला शिक्षा में कमी आभाषित हुई है और महिलाएं गृहकार्य तक ही सीमित रह गयी थी। [5]

सल्तनत काल में भी महिलाओं के स्वरूप अन्य काल के जैसे माँ बहन बेटी पत्नी आदि अपने सभी रिश्तों के साथ शासिका संरक्षिका, कवियत्री बीरांगणा विदुषी आदि विभिन्न स्वरूपों में थी।

शोध विधि

प्रस्तावित शोध अध्ययन में निम्नांकित विधियों एवं उपकरणों का प्रयोग वांछित है, किन्तु अध्ययन के दौरान वांछित जानकारियों के संकलन में यदि किसी अन्य विधि एवं उपकरण का प्रयोग करना उपयोगी होगा तो उसे सहज ही स्वीकार कर शोध प्रबन्ध में वर्णित किया जायेगा–

1. सल्तनत कालीन ग्रन्थों का अध्ययन करके,
2. सल्तनत कालीन मौलिक स्त्रोतों का अध्ययन करके,
3. विवरणात्मक विधि का प्रयोग एवं
4. कम्प्यूटर डाटा से जानकारी एकत्र करके शोध कार्य पूर्ण किया जायेगा।

शासिका स्वरूप में महिलायें

शासिका के रूप में तो सल्तनत युग में रजिया सुल्तान के रूप में स्वतंत्र कार्य की थी परंतु उसके पूर्व शाहतुर्कान रूकनुद्दीन फीरोजशाह के कार्य काल में अपरोक्ष रूप से कार्य किया है। इनके अतिरिक्त कई महिला शासकों के इस काल के पूर्व भी शासक रहने के प्रमाण प्राप्त होते हैं।

शंकरवर्मन कश्मीर का राजा युद्ध करता हुआ मारा गया। उसकी मृत्यु के उपरांत राज्य मे अराजकता फैल गयी। इसलिए कश्मीर के ब्राम्हणों ने अपनी जाति के यषस्कर नामक व्यक्ति को सिंहासन पर बैठा दिया। उसके वंश का थोड़े समय पश्चात् ही अंत हो गया और पर्वगुप्त ने एक नये वंश की नींव डाली। पर्वगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र क्षेमेन्द्र हुआ। उसके समय में राज्य की संपूर्ण शक्ति उसकी रानी दिद्दा के हाथ में रही। अंत में इस शक्तिशाली स्त्री ने गद्दी पर अधिकार कर लिया और स्वयं शासिका बन बैठी। उसने 1003 ई. तक राज्य किया। तदुपरांत संग्राम राजसिंहासन पर बैठा। उसने लोहर वंश की स्थापना की। इस प्रकार जब महमूद गजनवी ने भारत के सिंहासन पर आक्रमण किया तो उस समय काश्मीर के शासन की बागडोर एक स्त्री के हाथों में थी और देश की दशा अति शोचनीय थी। [6]

इल्तुतमिश अपने पुत्रों के अयोग्य होने के कारण रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित करके गया था। किंतु उसके स्त्री होने के कारण तुर्क सरदारों ने इल्तुतमिश पश्चात उसके बड़े पुत्र रूकनुद्वीन फीरोजशाह को शासक बना दिया जो अयोग्य एवं विलासी था मिनहाज ने लिखा है वह भोग विलास में डूब गया और अनुचित साधनों पर राज्य के धन को नष्ट करने लगा। लेनपूल ने लिखा है फीरोजशाह प्रथम सुंदर दयालु उदार हृदय ऐयाश, मूर्ख नौजवान था जो अपना धन गवैयों मसखरों और बुरी आदतों में उड़ाता था। शराब के नशे में चूर होकर वह अपनी हाथी पर झूमता हुआ प्रशंसकों की भीड़ पर चमचमाती सोने की मोहरें फेंकता हुआ चलता था। अतः शासन की संपूर्ण शक्ति उसकी माता शाह तुर्कान के हाथों में आ गई। जिसने सैनिकों तथा अमीरों पर निर्मम अत्याचार किए। [7]

वस्तुतः इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद चालीस वर्ष संस्था ने मनमानी करनी चाही और उन्होंने दो कारणों से इल्तुतमिश की वसीयत की अवेहलना की। प्रथम रजिया एक नारी थी तथा वे नारी को अपनी सुल्ताना बनाये जाने के पक्ष में नहीं थे। दूसरे रूकनुद्वीन विलासी था इसलिए अमीरों ने सोचा कि उसके सुल्तान बनने के बाद वे मनमानी आसानी से कर सकेंगे, जो भी हो रूकनुद्दीनी केवल 6 महीने 7 दिन तक ही राज्य कर सका। उसकी विलासता अयोग्यता के साथ–साथ उसकी माता शाह तुर्कान द्वारा अनेक पुराने शत्रुओं की हत्यायें करवा देना आदि उसके पतन के कारण थे। शाहतुर्कान ने इल्तुतमिश के योग्य पुत्र को ईर्ष्या वश अंधा कर मरवा दिया। चारों ओर अराजकता फैल गई। कहते हैं कि रजिया ने डावांडोल राजनीति का लाभ उठाने के लिए लाल जोड़ा पहन कर जो उस समय न्याय की याचना करने वाला पहनता था, नमाज अदा करने इकट्ठी हुई जनता से सहयोग मांगा। जनसमूह ने महल पर आक्रमण कर आतंक से

राज्य करने वाली शाहतुर्कान तथा उसके बेटे रूकनुद्दीन को कैद कर लिया। इस प्रकार जन सहयोग से सर्वप्रथम मुस्लिम महिला अंत मे सुल्ताना बनी। यद्यपि स्त्रियों ने प्राचीन मिश्र और ईरान में रानियों के रूप में शासन किया था और कई बार संरक्षिका के रूप में नाबालिग राजकुमारों के शासनकाल मे भी राज्य संभाला था तथापि इस प्रकार पुत्रों के होते हुए सिंहासन के लिए पुत्री को सुल्तान घोषित करना तथा बाद में जनता द्वारा एक स्त्री को चुनना एक नया कदम था। इस घटना की विशेषता यह थी कि पहली बार राजतंत्र में तुर्की राज्य में एक विलासी सुल्तान तथा आतंकवादी उसकी मां को जनता ने राज्य से अलग कर दिया तथा दिल्ली के सिंहासन के लिए स्वयं को शासिका को चुना।

इल्तुतमिश अपने समान अमीरों के समक्ष गद्दी पर बैठने में झेपता था। इस भांति रजिया से पहले और बाद के इल्तुतमिश वंश के सभी सदस्य व्यक्तित्व और चरित्र की दृष्टि से उससे कहीं अधिक दुर्बल थे। इसलिए इल्तुतमिश के वंश रजिया प्रथम तथा अंतिम सुल्तान थी। जिसने केवल अपनी योग्यता और चरित्र बल से दिल्ली सल्तनत की राजनीति पर अधिकार रखा। तत्कालीन इतिहासकार मिनहाजुद्दीन सिरीज लिखते हैं कि वह महान शासिका बुद्धिमान ईमानदार उदार शिक्षा की पोषक न्याय करने वाली प्रजापालक तथा युद्धप्रिय थी। उसमें वे सभी प्रशंसनीय गुण थे जो कि एक राजा में होने चाहिए।

नया सुल्तान इल्तुतमिश का तीसरा पुत्र बहरामशाह था। उसे इस निश्चित शर्त पर गद्दी पर बैठाया गया था कि वह तुर्क अमीरों और मालिकों को पूर्णरूप से राजशक्ति का उपयोग करने देगा और स्वयं केवल राज्य मात्र ही करेगा, शासन नहीं। तुर्क अमीरों को उसने नाइब–ए–मुमालिकात को नियुक्ति करने का भी अधिकार दे दिया जो उसी समय नया स्थापित किया गया था। अतः इख्तियारूद्दीन एतगीन नामक व्यक्ति के नइबए मुमालिका पद पर नियुक्त किया गया।

नाइब–ए–एतगीन ने सुल्तान की बहुत कुछ शक्ति हड़प ली उसने बहराम की एक बहन से विवाह कर लिया और इस प्रकार वह सुल्तान से भी अधिक शक्तिशाली तथा महत्वपूर्ण हो गया। [8] इस प्रकार महिलाओं की शादियां भी राज्य सत्ता में अपरोक्ष रूप से विशेष प्रकार से सहायक होती थीं।

महिलाओं की वीरांगनाओं का स्वरूप

देवल में युद्ध के समय जब दाहिर मारा गया उस समय दाहिर की विधवा रानी बाई के नेतृत्व में सिंध की स्त्रियों ने रावर के किले से भयंकर युद्ध किया जिसमे अरबियों पर पत्थरों और चक्रों से भयंकर वर्षा की जिससे शत्रु को काफी घबराहट हुई और युद्ध करना असंभव हो गया राजपूत प्रथा के अनुसार रानी ने अपने साथियों के साथ जौहर कर लिया जिससे विदेशियों के हाथ न पड़ जायें। परंतु दाहिर की दूसरी रानी लाड़ी और उसकी दो कुमारी पुत्रियां सूर्यदेवी व परमाल देवी मुहम्मद बिन कासिम के हाथ आ गयी जिन्हें खलीफा वाहिद के समक्ष पेश किया तो राजकुमारियों ने पिता की मृत्यु का बदला लेने की नियत से खलीफ वाहिद से बोली कि आपके पास भेजने से पहले मुहम्मद बिन कासिम ने हमें भ्रष्ट कर दिया। जिस पर खलीफा द्वारा तत्काल उसे मारने का हुक्म दिया। उसकी मृत्यु के बाद राजकुमारियों ने बताया कि वह निर्दोश था। हमने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए ऐसा किया है तब उन दोनों राजकुमारियों को घोड़े की पूंछ में बंधकर मरने तक घसीटवाने का हुक्म खलीफा ने दिया और उनकी मृत्यु तक उन्हें घसीटा गया।

1305 ई. में राजा कनेरदेव ने सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली थी किंतु उसने अपन जिह्वा पर संयम नहीं रखा और बेला कि मैं हर समय अलाउद्दीन का सामना करने के लिए उद्यत हूँ। इससे सुल्तान का क्रोध भड़क उठा और राजा को नीचा दिखाने के उद्देश्य से उसने अपने महलों की एक नौकरानी गुलेबिहिश्त की अध्यक्षता में उसके विरूद्ध एक सेना भेजी। उस स्त्री ने जालौर को घेर लिया। कनेरदेव पर इतना भारी दबाब था कि वह आत्मसमर्पण करने को ही था कि गुलेबिहिश्त की मृत्यु हो गयी राजपूतों ने उसके पुत्र को पराजित किया और उसको मार डाला। किंतु जब कमालुद्दीन गुर्ग के द्वारा राजा को परास्त किया और दिल्ली सल्तनत में सम्मिलत कर लिया। इस प्रकार गुलेबिहरत एक बहादुर महिला थी। [9]

हरम की महिलाओं का स्वरूप

हरम में शासकों व राजाओं की पत्नियाँ व रानियाँ, शासक की बेगमें रखैल व अन्य महिलाएं रहती थी। इसी प्रकार रनिवास में राजाओं की रानियाँ एवं अन्य महिलाएं रहती थीं। हरम या रनिवास का अर्थ उस निवास स्थल से था जहाँ महिलाएं रहती थीं। यहाँ पर शासक अपना वासनामय रंगीन जीवन व्यतीत करता था। शाही हरम में रहने वालों को महल के भीतर सुरक्षित आवास प्रदान किये जाते थे। वहाँ पर्दा का समुचित पालन होता था। शाही हरम के देखरेख का काम खुफिया स्त्रियाँ और हिजड़े करते थे। हरम की भीतरी देखभाल अमीर घराने की हाकिमा और बाहरी देखभाल ख्वाजा सराय (मुख्य हिजड़ा) करता था। रात्रि में रक्षिका भवन का और उसके निवासियों की भीतरी सुरक्षा का भार ले लेती थीं ख्वाजा सराय अपने कर्मचारियों के साथ प्रवेश द्वार की रक्षा करता था और विश्वासी राजपूत रक्षक भवन का पहरा देते थे। मालवा के राज्य में हरम ने नियमित सेनाओं कलाकार व्यापारी स्त्रियों और एक विशाल बाजार वाले छोटे–मोटे शासन का रूप धारण कर लिया था और इस हरम का एकमात्र पुरूष शासक सम्राट ही झगड़ों का निपटारा करता था, और वेतन नियत करता था। हिन्दू मध्यकालीन राजपूतों में अंतःपुर की परंपरा पूर्व से ही चली आ रही थी। हर्ष के काल में इसे अंतः पुर या रनिवास कहते थे। [10]

बुरहान मासिर का रचयिता फीरोजशाह का वर्णन इस प्रकार करता है – वह दयालु निष्पक्ष तथा उदार राजा था। कुरान की नकल करके जीवन व्यतीत करता था। उसके हरम की स्त्रियाँ वस्त्रों पर बेलबूटा काढ़कर तथा उन्हें बेचकर जीवन यापन करती थी। वही लेखक पुनः कहता है वह अद्वितीय शासक था। उसके न्याय के बहुत से स्मृति पत्र आज तक इतिहास के पृष्ठों पर विद्यमान है। किंतु यह अतिशयोक्ति प्रतीत होती है क्योंकि फिरिश्ता स्पष्टतया कहता है कि यद्यपि वह धार्मिक क्रियाओं का दृढ़ पालन करता था फिर भी वह अत्यधिक मद्यपान करता संगीत से हार्दिक सहानूभूति रखता तथा एक विशाल हरम का पोषक था जिसमे विभिन्न जातियों की महिलाएं थी। [11]

महिलाओं के सौन्दर्यता (सुन्दरता) का स्वरूप

अलाउद्दीन 1303 ई. में राजपूताना राज्य के मुख्य राज्य मेवाड़ की ओर अपनी सेना थी इसके पूर्व किसी मुसलमान शासक ने लंबी पर्वतमालाओं और घने जंगलों से सुरक्षित इस निर्जन प्रदेश में घुसने का साहस तक नहीं किया। मेवाड़ की भौगोलिक स्थित कुछ ऐसी थी कि किसी भी विजेता को उस पर प्रभुत्व स्थापित करना कठिन था। चित्तौड़ का दुर्ग एक बड़ी चट्टान काटकर बनाया गया था और अपनी भयान प्रतिभा का प्रदर्शन करता हुआ निम्न स्थित उस विशाल एवं विस्तृत क्षेत्र की उपेक्षा कर रहा था जहाँ हिन्दू और मुसलमान सेनाएं एक दूसरे को जीवन मरण के पास में जकड़ने का प्रयास कर रही थी। किंतु अभेद्य दुर्ग सुल्तान के विजय प्रयास में कोई अवरोध न पैदा कर सका। उसने 1303 ई. मे अपनी सेना सहित मेवाड़ की ओर कूच कर दिया। फिरिश्ता और टाड के अनुसार तात्कालिक आक्रमण का कारण राणा रतनसिंह की अद्वितीय रानी पद्मिनी का अनुपम सौंदर्य तथा सुल्तान की उसकी प्राप्ति की अदम्य अभिलाषा थी। रानी अपने सौंदर्य के लिए संपूर्ण भारत मे प्रसिद्ध थी। उसकी यह प्रसिद्धि मेवाड़ पर सुल्तान के तात्कालिक आक्रमण का कारण बन गई।

[12] राणा अलाउद्दीन 1303 ई. के प्रारंभ में चित्तौड़ जीतने का संकल्प किया और 28 जनवरी को दिल्ली से चलकर उसे घेर लिया। कहा जाता है कि उसका मुख्य उद्देश्य राणा रतनसिंह की अनुपम पत्नी रानी पद्मिनी को प्राप्त करना था जो उस समय समस्त भारत में सबसे अधिक सुंदर तथा गुणवती स्त्री समझी जाती थी। परंतु गौरीशंकर हीराचंद ओझा तथा डॉ. के.एस. लाल आदि आधुनिक इतिहासकारों ने इस कहानी को बाद की बनाती हुई मानकर अस्वीकार किया है। यद्यपि अलाउद्दीन की समस्त भारत को एक राश्ट्र बनाने की महत्वकांक्षा तथा यह तथ्य कि मेवाड़ के स्वतंत्र रहते हुए इस स्वप्न का पूरा होना असंभव था चित्तौड़ पर आक्रमण करने के पर्याप्त कारण थे। फिर भी इस बात के प्रमाण हैं दिल्ली सुल्तान रूपवती पद्मिनी को प्राप्त करना चाहता था। उसने किले को घेरकर निकटवर्ती चित्तौड़ी नामक पहाड़ी पर अपना सफेद शामियाना गाड़ दिया। किंतु किले को हस्तगत करने के सभी प्रयत्न विफल रहे और घेरा लगभग पांच महीने तक चलता रहा। वीर राजपूतों ने इतना कठिन प्रतिरोध किया कि शत्रुओं को भी उनकी प्रशंसा करनी पड़ी किंतु अपने से कहीं अधिक बलशाली शत्रु के विरूद्ध युद्ध जारी रखना निरर्थक था। इसलिए अंत में राणा रतनसिंह को बाध्य होकर हथियार डालने पड़े। स्त्रियों ने अपने सम्मान की रक्षा के लिए भीषण जौहर कर लिया। क्षुब्ध होकर अलाउद्दीन ने वीर राजपूतों के संहार की आज्ञा दे दी। अमीर खुसरव लिखता है कि केवल एक दिन में 30000 राजपूत मारे गए थे। विजय के उपरांत अलाउद्दीन ने चित्तौड़ का नाम खिजराबाद रखाऔर अपने पुत्र खिज्रखां को उसका शासक नियुक्त करके दिल्ली को लौट गया। कहा जाता है कि पद्मिनी को प्राप्त करने की अपनी योजना में अलाउद्दीन को सफलता नहीं मिली तो वह घेरा उठाकर लौटने को राजी हो गया। किंतु शर्त यह रखी थी कि रतनसिंह एक दर्पण में उसे पद्मिनी के सुंदर मुख का प्रतिबिंब दिखा दे। परंतु जब राणा किले के बाहर सुल्तान को उसके खेमों तक पहुंचाने गया तो उसने धोखे से उसे गिरफ्तार करवा लिया किंतु पद्मिनी ने बड़ी चतुराई से अपने पति को शत्रुओं के चंगुल से मुक्त कराने में सफल हुई। आधुनिक इतिहासकारों ने इस कहानी को अनैतिहासिक कहकर अस्वीकार किया। इसे अस्वीकार करने के कारण इस प्रकार हैं अमीर खुसरव ने जो अलाउद्दीन के साथ चित्तौड़ गया था और घेरे के समय वहां उपस्थित था इस विषय में कुछ नहीं लिखा है अन्य तत्कालीन लेखकों ने भी इसका उल्लेख नहीं किया है। कहानी मलिक मुहम्मद जायसी की लिखी हुई है जिसने अपन पद्मावत 1540 ई. मे लिखा था और सभी परवर्ती लेखकों ने उसी का अनुकरण किया। ये तर्क अमीर खुसरव के ग्रंथों उथले अध्ययन पर अवलंबित है और युक्तिसंगत नहीं है। अमीर खुसरव अवश्य इस घटना की ओर संकेत करता है जबकि वह अलाउद्दीन की सुलेमान से तुलना करता है, सैबा को चित्तौड़ के किले भीतर बताता है और अपनी उपमा उस हुद हुद पक्षी से देता जिसने यूथेपिया के राजा सुलेमान को सैबा की सुंदर रानी बिलाकिस का समाचार दिया। खुसरव के वृत्तांत से स्पष्ट है कि चित्तौड़ के किले पर अधिकार करने से पहले अलाउद्दीन उसके साथ एक बार उसके भीतर अवश्य गया था। उस किले में जिसके भीतर पक्षी भी उड़कर नहीं पहुंच सकते थे। राणा आलउद्दीन के खेमों में आया और उसने तभी समर्पण किया जब सुल्तान किले के भीतर से वापस लौटा। राणा के हथियार डाल देने के उपरांत निराश अलाउद्दीन की आज्ञानुसार 30000 राजपूतों का वध किया। [13]

फीरोज की माता भट्टी राजपूत राजा रनमल की पुत्री थी। यह विवाह बलपूर्वक किया गया था। कहा जाता है जब गाजी तुगलक दिपालपुर का सूबेदार था उस समय उसने इस राजपूत लड़की के सौंदर्य तथा आकर्षण के विषय में सुना और उसका विवाह अपने छोटे भाई से करने के लिए रनमल पर दबाव डाला किंतु अहंकारी राजपूत ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। तब गाजी मलिक ने दमन से काम लिया और रनमल तथा उसकी प्रजा को घोर संकट में डाल दिया। लड़की ने अपने पिता से कहा कि मेरे दिये जाने से परिवार इस अवश्यम्भावी विनाश से बच सके तो मुझे इस प्रस्तावित विवाह में कोई आपत्ति नहीं है। फीरोज इसी विवाह से उत्पन्न हुआ था। [14]

इस प्रकार सल्तनत काल में अनेक युद्ध महिलाओं की सौम्यता एवं सुंदरता के कारण से उन्हें प्राप्त करने के लालसावश भी हुए हैं।

विदुषी महिलाएं

ज्ञान एक ऐसी क्षुधा है जिसका न आदि है न अंत। मन मात्र में ज्ञान की जिज्ञासा होती है। उपलब्ध स्रोतों से मनुष्य ज्ञान ग्रहण करना चाहता है और ज्ञान ग्रहण कर मनुष्य अपूर्ण से पूर्ण बनना चाहता है। मनुष्य की यह ज्ञान प्राप्ति की क्रिया आदिकाल से चलती आ रही है जो आज भी जारी है। मुहम्मद साहब ने ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य का धर्म माना है जिसके अभाव में मुक्ति संभव नहीं। अतः प्रत्येक मुस्लिम स्त्री पुरूष को ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य कहा गया है।

ब्रह्म गुप्त ने आर्य भट्ट के पृथ्वी को सूर्य के चारों ओर घूमने के सिद्धांत का विरोध किया था। परंतु 12 वीं शताब्दी में भास्कराचार्य ने उसका फिर प्रतिपादन किया। भास्कर की बेटी लीलावती भी गणितज्ञ थी। गणित और ज्योतिष का ज्ञान भारत का अन्य देशों से उच्च स्तर का था। [15] 12 वीं सदी में भी भारत में लीलावती जैसी विदुषी महिलाएं थी।

दासियों के रूप में महिलाएं

इस युग में दास प्रथा का काफी प्रचलन था। यह प्रथा हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों समाजों में विद्यमान थी। परंतु मुस्लिम इनमें आगे थे। हिन्दू दासों के संदर्भ में हिन्दू स्मृतियों का वर्णन उल्लेखनीय है। इनमें निम्न दासों को उल्लेख है– घर की दासी से उत्पन्न, खरीदा हुआ दास, भेंट में प्राप्त दास, अकाल के समय मृत्यु से बचाया हुआ दास, युद्ध में बंदी दास, पतित साधु जो नौकरी कर ले व जो अपने आपको बेच दे आदि। मुस्लिम समाज में मुख्यतः क्रय भेट युद्ध में प्राप्त तथा आत्म विक्रेता जैसे चार प्रकार के दासों का प्रचलन था। इस काल में पशुओं सदृश्य दासों का भी हाट लगता था। जहाँ उनकी खरीद बिक्री होती थी। सामान्यतया दासों के साथ अच्छा व्यवहार होता था। अपने दासत्व काल में दास अपने स्वामी की आज्ञा बिना कुछ भी नहीं कर सकता था। कुछ विशेष स्थितियों मे दासों को स्वतंत्र करने के नियम भी समाज में प्रचलित थे। स्वामी दास के सेवा से संतुष्ट हो उसे मुक्त कर सकता था। ऋण दास, ऋण चुकाने पर स्वतंत्र किया जा सकता था। हिन्दू जल व अक्षत छिड़करकर दास को मुक्त करता था तो मुसलमान लिखित पत्र देकर उसे मुक्त कर सकता था। [16]

मुहम्मद बिन कासिम के युद्ध के समय सिंध में दाहिर के शासन काल में देवल पर अधिकार कर लिया और नगरवासियों को इस्लाम व मृत्यु में से एक चयन करने के लिए कहा तब सभी नगरवासियों ने मृत्यु का चयन किया। इसके पश्चात् 17 वर्ष तक के सभी पुरूषों का वध कर दिये और बच्चों एवं महिलाओं को दास बना लिया। दासियों का पुत्र रूकुनुद्दीन फिरोजशाह था जिसकी माँ शाहतुर्कान थी। जो अपने पुत्र फिरोजशाह के साथ अपरोक्ष रूप से शासन कर रही थी। जिसे बाद मे रजिया द्वारा गिरफ्तार करवा कर सत्ता संभाली थी। [17]

महिलाओं के अन्य स्वरूप

ऐसा प्रतीत होता है कि मुहम्मद गौरी की भी यह इच्छा थी कि कुतुबुद्दीन ऐबक भारत में उसका उत्तराधिकरी बने क्योंकि 1206 ई. में उसने उसे नियमित रूप में अपना प्रतिनिध नियुक्त कर मलिक की उपाधि से विभूषित किया था। जब मुहम्मद की मृत्यु

का समाचार विदित हुआ तो लाहौर के नागरिकों ने कुतुबुद्दीन को राजशक्ति धारण करने के लिए आमंत्रित किया। वह दिल्ली से लाहौर पहुंचा और राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली किंतु उसका राज्याभिषेक मुहम्मद गोरी की मृत्यु के तीन महीने बाद 24 जून 1206 ई. के दिन संपन्न हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि बीच का यह समय कुतुबुद्दीन ने अपने समर्थकों का शक्तिशाली दल बनाने में व्यय किया। वास्तव में सिंहासन पर बैठने से पहले ही उसने चतुर वैवाहिक नीति द्वारा अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली थी। उसने अपनी पुत्री का विवाह इल्तुतमिश, बहन का नासिरूद्दीन कुबाचा तथा स्वयं अपना ताजुद्दीन एल्दौज की पुत्री के साथ कर लिया। सिंहासनारोहण के समय उसने मलिक तथा सिपहसालार की उपाधियाँ धारण की सुल्तान की नहीं। [18]

इससे स्पष्ट होता है कि सल्तनत काल में महिलाओं के अनेक स्वरूप थे, और ऐसा स्पष्ट होता है कि शासक बनने के लिये महिलाओं की शादी आदि से लाभों को प्राप्त करने सभी सार्थक प्रयास किये जाते थे।

बहलोल लोदी का हृदय दयालु था। कहा जाता जाता है उसने की किसी भिखारी अथवा निर्धन व्यक्ति को अपने फाटक से निराश नहीं जाने दिया। स्त्रियों के प्रति वीरोचित सम्मान की भावना थी। जौनपुर के सुल्तान हुसैनशाह की बेगम उसके अधिकार में आ गयी किंतु उसने उसके साथ शिष्टता एवं आदर का व्यवहार किया। और शक्तिशाली रक्षकों के साथ उसे अपने पति के पास वापस भेज दिया। [19]

किंतु बहलोल जौनपुर के राज्य को पराजित करके दिल्ली सल्तन मे मिलाने का इच्छुक था। शर्की वंश के महमूदशाह ने सैय्यद वंश के अंतिम सुल्तान अलाउद्दीन की पुत्री से विवाह कर लिया था। वह धमण्डी स्त्री अपने पिता का बदला लेना चाहती थी इसलिए उसने अपने पति को दिल्ली पर आक्रमण करने तथा वहाँ बहलोल को मार भगाने के लिए उत्तेजित किया।

सुल्तान फिरोज तुगलक दिल्ली का पहला शासक था, जिसने औरतों को दिल्ली नगर के बाहर स्थित कब्रों पर जाने से रोक दिया। सुल्तान सिकंदर लोदी ने भी औरतों को मजारों पर जाने से वर्जित किया। फिर भी डोली पालकी तथा चौडोल जो पूरी तरह ढंके रहते थे उसमे मुसलमान स्त्रियाँ बाहर निकलती थी। हिन्दू स्त्रियों सामान्यतया घूंघट का प्रचलन था। [20]

विदेशी यात्री के लेखों से हमें विजयनगर के लागों के सामाजिक जीवन का सपष्ट चित्र मिलता है। महिलाओं को आक्रमण तथा बचाव के विभिन्न अस्त्र–शस्त्रों के प्रयोग संगीत कला तथा ललित कलाओं की शिक्षा दी जाती थी कुछ को उच्चकोटि की साहित्यिक शिक्षा भी मिलती थी। उससे स्पष्ट है स्त्रियों के लिए किसी प्रकार की सामान्य शिक्षा का अवश्य प्रबंध रहा होगा। नुनिज लिखता है स्त्री हिसाब रखने वाले स्त्री क्लर्कों और स्त्री अंगरक्षकों के अतिरिक्त राजदरबार में स्त्री पहलवान, स्त्री ज्योतिशी और स्त्री भविष्यवक्ता थी। निस्संदेह संगीत नृत्य तथा अन्य ललित कलाओं में वे पुरूषों से अधिक बढ़ी चढ़ी थी। धनी लोगों में बड़े पैमाने पर दहेज का रिवाज था। विधवाएं अपने मृत पतियों के साथ चिता में जलकर सती हो जाया करती थीं। [21]

सल्तनतकाल में महिलाओं के साथ लूटमार

दोआब के विद्रोहियों एवं मेवातियों के कारण चारों तरफ आतंक फैल चुका था। परिणामस्वरूप शाम होते ही प्रायः दिल्ली के दरवाजे बंद कर लिए जाते थे। इतिहासकार बरनी ने लिखा है दोपहर की नमाज से पहले भी वे दासियों को लूटते थे जो तालाब से पानी लेने जाती थी। वे उनके कपड़े उतारकर ले जाते थे और उनको नग्न छोड़ देते थे। डॉ. अविधबिहारी पाण्डेय के शब्दों में साम्राज्य के केन्द्रीय भाग में स्थिति राजपूत सरदार एवं भूमिपति सुल्तान के कर्मचारियों को सताने और उसके खजाने अथवा रसद के सामान को लूटने से ही संतुष्ट नहीं होते थे वरन उनमें से कुछ इतने साहसी एवं बलवान हो गये थे कि वे दिनदहाड़े राजधानी में घुसकर लूटमार करते और मुसिलम स्त्रियों के न केवल आभूषण वरन वस्त्र भी उतरवाकर सुल्तान की शक्ति और प्रतिष्ठा को बराबर चुनौती देते रहते थे। मुसलिम इतिहासकारों उनको डाकुओं अथवा लुटेरों की संज्ञा दी है। पंरतु मालूम होते हैं वे राजपूत प्रत्याक्रमण ओर प्रतिशोध के अग्रगामी दस्ते थे। [22]

अलाउद्दीन 1306–07 ई. में एक सेना सल्तनत के नाइब मलिक के नेत्त्व में भेजी गयी। नाइब को गुजरात के राजा कर्णदेवी की पुत्री देवलदेवी को भी लाने की आज्ञा दी गयी क्योंकि उसकी माता जो उस समय दिल्ली के रनिवास में थी उससे मिलना चाहती थी। कर्णदेव ने जो बगलाना के छोटे राज्य का स्वामी बन बैठा था रामचंद्रदेव के सबसे बड़े पुत्र शंकरदेव से अपनी बड़ी पुत्री का विवाह करने का प्रबंध कर लिया था। जिस समय लोग देवलदेवी को देवगिरि की ओर ले जा रहे थे मार्ग मे वह गुजरात के गवर्नर अलपखां के हाथों मे पड़ गयी, जो देवगिरि के आक्रमण में मलिक काफूर की सहायता करने जा रहा था। देवलदेवी को दिल्ली भेज दिया गया और अलाउद्दीन के बड़े पुत्र खिज्रखां से विवाह कर दिया गया। [23]

तुर्क शासन ने हिंदुओं को अपने जाति संबंधी नियम पहले से भी अधिक जटिल बनाने पर बाध्य किया। तुर्कों को सुंदर हिन्दू लड़कियाँ को अपनी पत्नी बनाने का शौक था इस कारण हिन्दुओं मे बाल विवाह का नियम बन गया। उच्च तथा मध्यम वर्गों में पर्दा प्रथा प्रचलित हो गयी। उस युग में नीची जातियों को छोड़कर अन्य लोगों में से विधवा विवाह का विचार ही जाता रहा था। ऐसा प्रतीत होता है। कि समृद्ध परिवारों को छोड़कर साधारण हिन्दुओं में स्त्री शिक्षा का पूर्ण अभाव था। [24]

निष्कर्ष

सल्तनत कालीन भारत में सामान्यतः स्त्रियों की स्थति संतोशजनक या सम्मानजनक नहीं थी। विजयनगर में भी हालात बेहतर नहीं थी। यहाँ स्त्रियों को आमतौर पर भोग की वस्तु ही समझा जाता था। विवाह पूर्व आयु में लड़कियों पर माँ बाप का नियंत्रण काफी कठोर होता था। छोटी उम्र में कन्याओं का विवाह कर दिया जाता था। आम लोगों में एक पत्नी प्रथा ही अधिक थी। किंतु राजपरिवार और सामंतीय परिवारों मे अनेक पत्नियाँ और उपपत्नियाँ रखने का रिवाज था। दहेज को एक कुरीति मानकर इसे अवैधानिक घोषित किया गया। दहेज लेने और देने वाले को दण्डित करने तथा समाज से बहष्कृत करने की व्यवस्था थी। समाज के उच्च वर्ग की महिलाओं संस्कृत और स्थानीय भाषा की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा में संगीत और नृत्य का महत्व बहुत ज्यादा था। मंदिरों में देवपूजा के लिए समर्पित स्त्रियों को देवदासी कहा जाता था। एक वर्ग के रूप में गणिकाओं की संख्या प्रभाव समाज में काफी अधिक था। अधिकांश गणिकाएं धनी और संपन्न थी। खास बात यह है कि इन गणिकाओं को समाज में घृणा की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। वे सामाजिक समारोहों में बड़ी संख्या में शामिल होती थी।

स्त्रियों में पर्दा प्रथा का कोई खास प्रचलन नहीं था। परंतु सती अर्थात पति के शव के साथ चिता पर सहगमन की प्रथा कुछ प्रचलित थी। कुछ विदेषी यात्रियों ने विजयनगर में सती होने के अनेक घटनाओं का उल्लेख किया है।

परंतु यह प्रथा राजपरिवारों तक ही सीमित थी। शेष वर्गों में सती प्रथा का आम प्रचलन नहीं था और राज्य की ओर से इसे प्रोत्साहन दिया जाता था। राज्य की ओर विधवा विवाह को प्रोत्साहन देने के लिए इस विवाह को करमुक्त रखा गया था। संभवतः ऐसे विवाह को सामाजिक समर्थन प्राप्त नहीं था। विधवाओं का जीवन काफी कष्टमय होता था।

विजयनगर साम्राज्य की यात्रा करने वाले विदेशी यात्रियों ने लोगों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों और आभूषणों का विस्तार से वर्णन किया है। राजपरिवार की महिलाएँ कीमती जरीदार वस्त्र दुपट्टा

और चोली पहनती थीं। सामान्य वर्ग की स्त्रियाँ साड़ी और चोली पहनती थीं। [25]

सन्दर्भ

1. मिश्रा, जितेन्द्र अप्रकाशित शोध प्राचीन भारतीय इतिहास में नारी सम्पत्ति के अधिकार का विकास पेज 235, 237, 240, 241, 248, 249.
2. पाठक, रश्मि – दिल्ली सल्तनत का इतिहास, पेज 93.
3. मिश्रा, रजनी – अप्रकाशित शोध "मुगलकाल में महिलाओं का साहित्य और कला में योगदान 1526–1707 तक, पेज 13–14.
4. मिश्रा, रजनी – अप्रकाशित शोध "मुगलकाल में महिलाओं का साहित्य और कला में योगदान 1526–1707 तक, पेज 2, 14.
5. मिश्रा, जितेन्द्र अप्रकाशित शोध प्राचीन भारतीय इतिहास में नारी सम्पत्ति के अधिकार का विकास पेज 255,258.
6. श्रीवास्तव, आर्शीवादीलाल – दिल्ली सल्तनत 711–1526, पेज 42.
7. नगोरी, एस.एल. – दिल्ली सल्तनत, पेज 63.
8. परुथी, आर.के. – सल्तनत कालीन भारत पेज 89.
9. श्रीवास्तव, आर्शीर्वादीलाल – दिल्ली सल्तनत 711–1526, पेज 14, 17, 22, 23, 58
10. राधेशरण – मध्यकालीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास, पृ. 69.
11. डॉ. ईश्वरीप्रसाद – भारत का इतिहास भाग –1, पेज 352.
12. डॉ. ईश्वरीप्रसाद – भारत का इतिहास भाग –1, पेज 292.
13. परुथी, आर.के. – सल्तनतकालीन भारत पेज 145,146.
14. श्रीवास्तव, आर्शीर्वादीलाल – दिल्ली सल्तनत 711–1526, पेज 194.
15. राधेशरण – मध्यकालीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास, पृ. 171, 172.
16. राधेशरण – भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना और संस्कृति के मूल तत्व, पृ. 145.
17. श्रीवास्तव, आशीर्वादीलाल – दिल्ली सल्तनत 711–1526, पेज 13, 102.
18. श्रीवास्तव, आर्शीर्वादीलाल – दिल्ली सल्तनत 711–1526, पेज 86, 224.
19. परुथी, आर.के. – सल्तनतकालीन भारत पेज 220.
20. राधेशरण – भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास, पृ. 71.
21. श्रीवास्तव, आर्शीर्वादीलाल – दिल्ली सल्तनत 711–1526, पेज 263.
22. नगौरी, एस.एल. – दिल्ली सल्तनत, पेज 67.
23. श्रीवास्तव, आर्शीवादीलाल – दिल्ली सल्तनत 711–1526, पेज 159.
24. श्रीवास्तव, आर्शीवादीलाल – दिल्ली सल्तनत 711–1526, पेज 302, 303.
25. पंजाबी, डॉ. बालकृष्ण– भारत का इतिहास, पेज 94, 95.